[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3436

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

गायन संगीत में नवाचार मंच की आधुनिक तकनीक

प्रदीप कुमार चोपडा
ध्रुवपद साधक (डागर वाणी) नैनीताल (उत्तरांखड)

संगीत एक ऐसा माध्यम है, जो साधक और श्रोता दोनों को एक सम्मोहन में बाँध कर रखता है, परंन्तु मनुष्य की ध्वनि की कुछ सीमायें होती है, और जहाँ तक उसकी ध्वनि प्राकृतिक रूप से जाती है, वहाँ तक ही वह असरदार सिध्द होती है, इसलिए रिकॉर्डिंग को मृत संगीत कहा जाता है । पुराने समय मे संगीत में जो, मंच होता था उसकी कुछ सीमायें थी, उससे सिर्फ उतने ही लोग लाभ उठा पाते थे, जहाँ तक साधक (संगीतकार/ वादक) की ध्वनि पहुँचें । परन्तु यह बात सही है, कि उस समय मनुष्य की शक्ति (भौतिक रूप से) आज के मनुष्य की तुलना में ज्यादा होती थी । इसके प्रमाण रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रंथो में देखने को मिलते है । तो यह सीधी सी बात है कि उस समय के मनुष्य की आवाज भी आज के मनुष्य की अपेक्षा ज्यादा असरदार होती होगी । पर उसकी भी सीमायें थी । पर आज जहाँ विज्ञान ने इतनी उन्नति की है, वही आज का मंच भी बहुत प्रभावशाली बना है, जिसमें उपयेाग होनेवाले आधुनिक यंत्र अत्यधिक शक्तिशाली है, कलाकारों को मिलने वाले यंत्र इतने प्रभावशाली होते हैं, कि वह उनके द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों को श्रोताओ तक वैसे को वैसा पहुँचाने में सक्षम है ।

क्योंकि भारतीय शास्त्रीय संगीत बहुत ही सुक्ष्म गुणों से युक्त है। इसमें होने वाले काम भी उतना ही सूक्ष्म है। जिसके लिए साधकों को अपने द्वारा की जानेवाली क्रिया का सही रूप से दर्शन होना जरूरी है, उसके लिए आज विज्ञान ने कई उत्तम किस्म की मशीनें प्रदान की है ।

आज के मंच की श्रेष्ठता इस बात पर निर्भर करती है, कि उसमें किस प्रकार की गुणवत्ता वाले उपकरणो व साधनों का प्रयोग किया गया है । वर्तमान में मंच को जो सुविधायें मिली हैं, उनका विवरण निम्न प्रकार दिया जा सकता है–,

1) उत्तम प्रकार के माईक.
2) उत्तम गुणवत्ता वाले मॉनिटर/स्पीकर
3) बैठने के लिए आरामदायक आसन
4) आधुनिक तकनीक युक्त विद्युत व्यवस्था
5) सज्जा के विभिन्न उपकरण
6) रिकॉर्डिंग के उत्तम सॉप्टवेयर

1) उत्तम प्रकार के माईक. :– आज के मंच को जो माईक प्राप्त हुए हैं वह श्रेष्ठ गुणवत्ता के है, उन माईको के आगे बैठा हुआ कलाकार यदि साँस भी लेता है तो वह उसे स्पष्ट रूप से पकड लेते है, यह माईक कई मायनो में कलाकार की ध्वनि को श्रोताओ तक स्पष्ट रूप से पहुँचाने में सक्षम है ।

2) मॉनिटर/स्पीकर :– जब कलाकार मंच में अपनी प्रस्तुति देता है तो उसके लिए आवश्यक होता है कि वह जो कर रहा है वह उसको सुनाई पडे, तभी वह अपने द्वारा प्रस्तुत किए जानेवाले कार्यक्रम की आगे की भूमिका को श्रेष्ठ रूपसे सोच सकता है । इसके लिए आज कलाकारों को इतने अच्छे मॉनिटर उपलब्ध है कि वह उनकी प्रस्तुति में बिना व्यवधान किए उनको उनके द्वारा किए जानेवाली क्रिया को प्रस्तुत करता है । और आज इतने अच्छे प्रकार के स्पीकर उपलब्ध है की वह किलोमीटरों तक मंच में चल रही प्रस्तुति को जैसे का तैसा का प्रस्तुत करने में सक्षम है ।

3) ***उत्तम आसन :–*** कार्यक्रम सुनने के लिए सभी वर्ग के लोग आते हैं, जिसमें बुर्जुग, बच्चे, महिलाएँ होती हैं, इन सभी के लिए आज के मंच में आरामदायक आसन उपलब्ध है । ऐसे कई मंच हैं जहाँ इन सभी बातो का विशेष ध्यान रखा जाता है । जैसे कि भारत भवन (भोपाल) ।

4) ***आधुनिक तकनीक वाले विधुत उपकरण :–*** आज के मंच को जो विद्युत व्यवस्था प्राप्त हुई है वह इतनी सरल है कि वह पूर्ण रूपसे मंच और श्रोताओ पर बिना व्यवधान किये एक समानांतर रूप से प्रकाश डालती है, इसका सबसे ज्यादा फायदा नृत्य व थियेटर के कलाकारो को प्राप्त हुआ है, जैसे नृत्य में बारिश का वर्णन करते हैं तो प्रकाश द्वारा बारिश का माहौल उत्पन्न किया जाता है । यदि नृत्य में सूर्योदय का वर्णन आता है तो लाल, पीले रंग के प्रकाश से सूर्योदय का आभास किया जाता है ।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

5) ***सज्जा के विभिन्न उपक्रम :–*** सज्जा के विभिन्न उपक्रमों में यह किया जाता है कि जो कलाकार प्रस्तुति देते है उनके चित्र की होर्डिग मंच के पार्श्व भाग में लगाई जाती है, जो मंच को रंजकता प्रदान करती है, व पुष्प, दीप आदि से मंच को पारम्परिक रूप दिया जाता है, एवं जैसा कला का संदर्भ अथवा विषय होता है उसके अनुसार भी मंच को सज्जित किया जाता है ।

6) ***रिकॉर्डिग के सॉफ्टवेयर :–*** मंच में हो रही प्रस्तुति को संरक्षित करने के लिए विज्ञान ने बहुत श्रेष्ठ प्रकार के सॉफ्टवेयर प्रदान किये है,

क – ध्वनि के लिए प्रोटूल्स, क्युबेस, नियन्डो आदि
ख – विडीयो के लिए अॅडाप्ट प्रीमीयर, अॅडीलेस आदि

आज के समय में जहाँ सुगम संगीत में अनेक प्रकार के विद्युत उपकरण ध्वनि उपकरण एवं ध्वनि में प्रभाव डालने के विभिन्न प्रकार (मशीनो से) दिये जाते है जिससे प्रस्तुत कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार के प्रभाव उत्पन्न होते है । जो बहुत ही सुन्दर व आनंददायी प्रतीत होते हैं।

लेकिन यह सब शास्त्रीय संगीत में उपयेाग नही किये जाते है, जबकि आज ऐसी मशीने व तकनीक उपलब्ध है जो बैठकी जैसा प्रभाव मंच से देनेमें सक्षम है, आज समाज में आम जनता जो शास्त्रीय संगीत के प्रति जागरूक नही है, या ऐसा कहे कि उदासीन है, इन सब उपकरणो के उपयेाग करनेसे वह इसके प्रभाव, मुल्य व गुण को समझ सकेगी ।

आज की मंच व्यवस्था कई मायनो मे पुराने मंच से अधिक श्रेष्ठ है, पर उसका सही उपयेाग आज भी शास्त्रीय संगीत के लिए नही हो रहा है, आयेाजको को इसमें एक बडा अहम भाग अदा करने की जरूरत है । उनको चाहिए कि श्रेष्ठ तथा नवीन तकनीको से निर्मीत साधनो को प्रयेाग करे एवं मंच के सुधार के लिए जो संभावनाये हो सकती है वो कलाकारो को प्रदान करे । और जो शास्त्रीय संगीत की प्रतियेागिताये कराई जाती है उनमें भी श्रेष्ठ गुणवत्ता वाले यंत्रो कां प्रयेाग करे जिससे उसमें भाग लेने वाले प्रतिभागी यह सोचने और समझने पर विवश हो की यह सबसे श्रेष्ठ प्रकार का संगीत है और प्रतिभागी इसे अपने जीवन में सदा के लिए स्थान दे ।

सही अर्थ में देखा जाये तो मंच ही वह स्थान होता है जो श्रेाता, साधक, कलाकार व शिक्षार्थीयो को एक उमंग, उत्साह व प्रेरणा देता है । यही मंच अत्याधुनिक साधनो से सुसज्जित होगा तो वह आने वाले विद्यार्थी, कलाकारो एवं श्रेाताओ को बरबस सुनने, सीखने के लिये विवश कर देगा । क्योकि मंच श्रेष्ठ होगा तो सही अर्थो में शास्त्रीय संगीत का प्रभाव देने में सक्षम होगा, क्योकि शास्त्रीय संगीत में (लय, लडन्त, भिडन्त, सुर) का ही महत्त्व नही होता बल्कि इस सब का सही सामंजस्य व उपयेाग होना एव इनका सही रूप में श्रेाताओ तक पहुॅचना ही शास्त्रीय संगीत की सबसे अहम भूमिका है और इस भूमिका का आधार कई मायनो में एक परिपूर्ण मंच ही है।